॥ प्रत्यं. ॥
॥ १ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ प्रत्यंगिरामालामंत्रसिद्धि प्रकीर्त्यते ॥ तारो मायानमः कृष्ण
वाससे शतवर्णकाः १ सहस्रहिंसिनिपदं सहस्रवदने पुनः ॥ महाबलेपदे पश्चादु
च्चरेदपराजिते २ प्रत्यंगिरेपरं सैन्यपरकर्मसहृन्वले ॥ ध्वंसिनिपरतंत्रोत्साद
नेसर्वपदं ततः ३ ॥ भूतानितेदमनीप्रोते सर्वदेवान्समुच्चरेत् ॥ वंधयुग्मं सर्वविद्यो
च्छेदियुक्तं हृदयमंत्रम् ४ ॥ परयंत्राणि संक्षोभ्य स्फोटयद्वितयं पठेत् ॥ सर्वशृं
खलात्रोटयद्वितयं ज्वल ५ ॥ ज्वालाजिह्वे करालांते वदने प्रसमुच्चरेत्
गिरे मायानमोंतोऽयं शरस्वर्योद्धारो मनुः ॥ छ ॥ ७ ॥ छ ॥ अथ प्रत्यंगिरामाला
मंत्रमाह ॥ ॐ ह्रीं नमः कृष्णवाससे शतसहस्रहिंसिनि सहस्रवदने महाबले अप
राजिते प्रत्यंगिरे परसैन्यपरकर्मविध्वंसिनि परमंत्रोत्सादिनि सर्वभूतदमनि

॥ रामः ॥
॥ २ ॥

Title → चन्द्रिकान्यासः (पूर्ण)
Author → ?
Date → Samvat 1888.
subject → Tantri
folios → 10
Xerox pages → 17
Acc. No. → ~~2018~~ M1398

॥प्रत्यं॰॥
॥२॥

सर्वदेवानवंधय२ सर्वविघ्नांछिंदि२ स्तोभय२ परयंत्राणिस्फोटय२ सर्वश्रृंखला
त्रोटय२ ज्वलज्ज्वालाजिह्वे करालवदने प्रत्यंगिरे ह्रीं नमः इति ॥१२४॥ शारस्य
होममंत्रः पंचविंशत्यधिकशतानि १२५ ॥ अथ शारिकेश्वरीमुक्तं माययास्या
षडंगकं ॥ ध्यायेत्प्रत्यंगिरां देवीं सर्वशत्रुविनाशिनीम् ॥ सिंहारूढां त्रिनेत्रां त्रि
भुवनभयकृद्रूपमुग्रं वहंतीं ज्वालावक्त्रां वसानां नववसनयुगं नीलमाया
मकीर्तिः ॥ शूलं खड्गं वहंतीं निजकरयुगले भक्तरक्षैकदक्षा सेयं प्रत्यंगिरा संप्र
पयति रिपुमिति निर्मितं योऽविचारम् ॥ अयुतं प्रजपेन्मंत्रं तत्सहस्रं तिलराजिका
हुत्वा सिद्धमंत्रं प्रयोगेषु शतं जपेत् १० ग्रहभूतादिकाविष्टं सिंचेन्मंत्रेण ज
जपन् जलैः ॥ विनाशयेत्परकृतं मंत्रं यंत्रौदिकं मैरणं ॥ इति प्रत्यंगिरामाला मंत्रः

॥प्रत्यं॰॥
॥२॥
नर२

न० १०
१

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ चाउर पढने का मंत्र ॥ ओं लिखार मुलकि वेटी बी
बी फातमाः ॥ तीन दिया चाउर पढि साधु जन के खाये देल ॥ तीन का मुष
पीर की बूढ़ाय ल ॥ चोर जन के खाय देल तिन का मुख लट पूटाय पर
ल दोहाई शले मां न पैगंवर की ॥ १ ॥ कटोरा चलावे का मंत्र ॥ ॐ हरी च
क्र शनी चक्र विशिनी मा चक्र ग्रामे ग्रामे चोरा चल कटोरा यामे यामे
वाटे गेल चोरा तामे तामे चल कटोरा वेगी चल वेगी चल ॥ दोहाई राजा
रामचंद्र लक्षमान जांनकी हनुमांन की वेगी चल वेगी चल वेगी चल ॥ १ ॥

मं०
१

3

॥ शनिश्चरकेशं जमसी खाय एतवारकेशं जम सोरहे एकशोएक ॥१॥
वेरी पढि केशरी सो कटोरा पर डारे तव कटोरा चले ॥ मंत्र जांघ मुंडेका ॥
पूर्व दिशा शो आई लयो गिनि पश्चीम परलहं कार सर्व लोहाके राधो
धो रकट कटार छुरी ॥ मो रनाग फुट पार्वतिक स्थन टुट ईश्वर महादेव
के जटा टुट टुट दोहाई ईश्वर महादेव गोरा पार्वतिकी ॥१॥ शनिवारके अ
स्तुरा नेवते एतवारके वासी मुह जांघ मुंडे चोरक मुंड मुंडल जाय फुगहो
य तो डाइनके मुंड मुंडल जाय ॥२॥ मंत्र खुरहाके सिद्ध गुरुका पाव वंदो ॥

मं० १०
२

ईंगंगा यमुना श्रो सरस्वती ॥ गोवरा वहा गोरष जती ॥ नछुवे मुहन फाटै ।
खुरी ॥ गोरषनाथ की वाचा फुरी ॥ १ ॥ तेल पढा के कांन मो दे वे नुत नाग के
बोले ॥ सिद्ध गुरु के पाव वंदो ॥ तैथा किलो मैथा कीलो ॥ था किलो जग ।
संसार ॥ हां कदे डांकुमारी ॥ लो मांन वावी वार ॥ शीत सुमेरु पर्वत त्व हिम
मा हादेव डा किलो जे पंथ आईलो ॥ नारि पुता ते पंथ जाईलो ॥ दोहाई ईश्व
र महादेव गोरा पार्वती की ॥ १ ॥ तर वार गोली तीर बांधवे का मंत्र ॥ धार धा
र बंधो शात वार ॥ आवे न गोली फुटे न घाव ॥ रक्षा करै श्री रखराय ॥ तरवा

मं०
२

5

तेकरावतीदुईवोतुं ॥ अहिंदरमंहीदर ॥ तेकराशातपुतकोनकोन ॥ एक
कजर ॥ दोजर ॥ तेजर ॥ रतीजर ॥ शीततापजर ॥ खुटीफलानेकापी
डथानछोडीजाहवेजाह ॥ दोहाई राजाअजेपाल ॥ रानीमंदनावतीकी
दोहाई नोनाचमारीनीकी ॥ जाहिवेजाहि ॥ तारकैपातमोएतवाररोज
लिखिकेबांधेछुटिजाय ॥ ए ॥ शाकुनजाचाक ॥ रविरादोमोमेयोगी ॥ कुं
जदिनमलिआबुधदिनरोगी ॥ गुरुदिनतेली ॥ शुकदिनशुनहाशनि
दिनलवहाजायेनपेलि ॥ शातऊंदिनकरईहैशुनाव ॥ जीवनजुडामन

मं० १०
४

देखाव ॥ चलई कुबेरा ॥ ऽसन मिलेतो जात्रा सुफल न होय ॥ १ ॥ ॐ स्वस्ति:
॥ ॐ दिगंबराय विद्महे दिर्घाक्षि क्ष्माय धिमहित नो भैरव प्रचोदयात ॥ भै
रवगायत्री ॥ १ ॥ ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहित न्नो विष्णु
प्रचोदयात ॥ २ ॥ विष्णुगायत्री ॥ ॐ वक्रतुंडाय विद्महे लंबोदराय धिम
हित न्नो दंति प्रचोदयात ॥ ३ ॥ गणेशगायत्री ॥ ॐ तत्पुरुषाय विद्महे म
हादेवाय धीमहित न्नो रुद्र प्रचोदयात ॥ रुद्र गायत्री ॥ ४ ॥ ॐ कात्याय
नी विद्महे कन्याकुमारी धीमहित न्नो दुर्गा प्रचोदयात ॥ दुर्गागायत्री

मं०
४

7

॥ ५ ॥ ॐ भास्कराय विद्महे अघोररूपाय धीमहि तन्नो सूर्यः प्रचोदयात् ॥ सूर्यगायत्री ॥ ६ ॥ ॐ वज्रनृसिंहाय विद्महे तीक्ष्णदंष्ट्राय धीमहि तन्नो नृ
सीहः प्रचोदयात् ॥ नृसिंहगायत्री ॥ ७ ॥ ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वैनतेयाय
धीमहि तन्नो गरुडः प्रचोदयात् ॥ गरुडगायत्री ॥ ८ ॥ ॐ विजीवनाय वि
द्महे कंदलाय धीमहि तन्नो जलः प्रचोदयात् ॥ जलगायत्री ॥ ९ ॥ ॐ सिंव्या
य विद्महे गगनाय धीमहि तन्नो आकाशः प्रचोदयात् ॥ आकाशगायत्री
॥ १० ॥ ॐ ऐं ऐं ऐं सूर्याप्रियाय विद्महे क्लीं वागीश्वराय धीमहि तन्नो शक्तिः

मं० पु०
५

चोदयात् ॥ शक्तिगायत्री ॥ ११ ॥ ॐ दत्तात्रयाय विद्महे दिगंबराय धीमहि तन्नो अ

दत्तः प्रचोदयात् ॥ दत्तगायत्री ॥ १२ ॥ ॐ तत्पुरुषाय विद्महे देवाय धीमहि त

न्नो वैरूपः प्रचोदयात् ॥ वैरूपगायत्री ॥ १३ ॥ ॐ तत्पुरुषाय विद्महे सेनाय धी

महि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ रुद्रगायत्री ॥ १४ ॥ ॐ वं डिम्बराय विद्महे महा

देवाय धीमहि तन्नो चंडी प्रचोदयात् ॥ चंडीगायत्री ॥ १५ ॥ ॐ पशुपतये वि

द्महे महादेवाय धीमहि तन्नो पशुः प्रचोदयात् ॥ पशुगायत्री ॥ १६ ॥ ॐ गुरु

देवाय विद्महे परमगुरु धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात् ॥ गुरुगायत्री ॥ १७

मं०
५

॥ ॐ पुरुं श्रीं ह्रीं गुरुं स्वाहा ॥ गुरुमंत्रः ॥ ॐ सोहं हंसाय विद्महे परमहंसाय धी
महि तन्नो हंसः प्रचोदयात् ॥ सच्चिदानंदगायत्रीः ॥ १९ ॥ ॐ हंसः सोहं परमा
त्मा चिन्मयं सच्चिदानंदस्वरूपं सोहं ब्रह्म प्रचोदयात् ॥ २० ॥ इति ब्रह्मगाय
त्रीः ॥ ॐ अनिलपुरुषाय विद्महे सर्वअनिलाय धीमहि तन्नो अनिलप्र
चोदयात् ॥ अनिलगायत्रीः ॥ २१ ॥ ॐ अनीलहंसः सोहंसः परमहंसः तत्त्व
अहं अस्मि ॥ अनिलपरमहंसः प्रचोदयात् ॥ परमहंसगायत्रीः ॥ २२ ॥ ॐ
ह्रीं ह्रां ह्रीं फट् स्वाहा ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रुं फट् स्वाहा ॥ इति पुरुषोचार्यमंत्रः ॥ २३ ॥

मं० प०
६

ॐ ह्रीं क्लीं कालिकरालिते जवंति ज्वालामुखि क्रुंकुट स्वाहा ॥ धुनी मंत्रः ॥ २३ ॥ ॐ ह्रीं क्लीं स्वाहा ॥ इति मूलमंत्रः ॥ ॐ रं रं रं रूं रूं रं ॥ इति बीजमंत्र ॥ ॐ
जलजलजलपापानिजलकीयायसुधते ॥ जलजागज्ञानं तिजलदे
वनमोस्कते ॥ इति जलमंत्रः ॥ २४ ॥ ॐ करोति करोति महाकरोति आस्ती
काजीते काटु क्षेदकाटु वेदकाटु कुं ज्ञानकाटु विज्ञानकाटु स्वरसान
स्वरावानकाटु काटियेफेरखनेषां नतवेटि रज्ञाननो फलेमोरज्ञान
फलेतवेटि जेमरुटुत अमि आसे जेदेवी कालीरुंडीरपुत फलांने

मं०
६

11

अंगेकरेघावमुडीतपषारेब्रह्मपायहरसुदिगुरुरपायेकामरूकामष्या
मायेहाकिक्रिरेपाईयेसिंघ्रष्माडियेजेकारअज्ञाजेमायेकालीरअष्पा
गुरुरशाक्तिमोरीनक्रिफुरोमंत्रईश्वरोवाचा॥१॥ॐकालीकालीमहा
कालीईश्वरकुंवीगोरातालीचामुंडामायेंतेरीरषवारीगाजंतिआघो
रंतिआचारोचक्रफीरंतिआतनवदनकोपोषंतीआसेसेसिधोवान।
जाडुटोनदीवमुविलंलटिवानत्रंसहीपरजायफलानेरपीडप्राणरा।
स्पाकरेश्रीमायेकालीकागुरुकीशाक्तिमेरीनक्रिफुरोमंत्रईश्वरोवा

मं० पु०
७

वा ॥ २ ॥ ॐकालकंकालमहाच्यजेपालचारीनाईहमकोरषेच्योरकीनषें
तीनवीलुंपानीपीवैसोहंकालनिरंजननाईतामागिरेधरतीलाजेहव
गीरोशिवशंकरलाजेधद्हपीडपरेगुरुगोरषलाजेच्यागमनाथकीक्वी
कायाखुगजुगवालाकरहीहोसोहंसहस्वजुगकीयावलननलदेहगुरुगो
रषनाथशंजुनाथकिदोहाई ॥ इतिकालपरमहंस ॥ ३ ॥ ॐनमोच्यादेश
गुरुकौ ॥ गुरुगोरषनाथचलेदेशंतरउहामागितीनवाचाकुरीसर्पबां
धुवीछुंवांधुभूतबांधुप्रेतबांधुचोरबांधुचंडालबांधुपीडकीदाहबांधुयी

मं०
७

रु बांध बांधु बीज ली कि धार बांधु बाघ की दाढ बांधु आगे आवे आगे बांधु
पाछे आवे पाछे बांधु वन घर छोडि चोर वनचर जाहि हरि नसावज मारि
मारि षाय दोहाई ईश्वर महादेव कि दोहाई जति गोरष नाथ की दोहाई पा
र्वती की नीना चमारी कि शक्ति मेरे मन कि फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥ इति मंत्र च्य
टोत्तर शतं जपेत सर्वबंधन होय ॥ ४ ॥ ॐ मालेमाले महामाले सर्वमाले ।
विधाई नि ॥ लां मालेसर्वविद्यानां ॥ सिद्धिदात्री नमोस्तुते ॥ १ ॥ ॐ सं सं सं श्री
श्री श्री ह्रीं ऐं नमः सिवाय ॥ ॐ सं सं सं रुद्राय नमः ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं रुद्राय नमः

मं० १०
६

॥ मुखब्रह्मा शिखा विष्णु ॥ स्वासा देव महेश्वरः ॥ सर्वांगे सर्वदेवानां ॥ रुद्राक्ष फल नमो स्तुते ॥ ९ ॥ ॐ अथर्ववन वन जोगी जव सक्ति कीन हि लिंग सरक जाक निष्टतो रिके लिंग वनाया नख नग विरिके मेरु वलाया श्वेसमनयो खेव त्रिमन सुमीरन की मेरु वनाया मुक्ति सेत वस्त्र पीतं रंगं पीत वस्त्र नगवा रंगं रंग खबकर जो नित सो संन्यासि मम प्रिये ॥ १० ॥ ॐ गेरुव्या मे विद्महे पितवस्त्र धीमहि तन्नो नगवा प्रचोदयात ॥ गेरु गायत्री ॥ ११ ॥ ॐ क्षीरपुत्राय विद्महे अमृततत्पाय धीमहि तन्नो चंद्र प्रचोदयात ॥ १२ ॥ ॐ क्षीर

मं०
६

पुत्राय अंगुष्टाभ्यां नमः ॥ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः ॥ अमृततपाय मध्यमाभ्यां
नमः ॥ धीमही अनामिकाभ्यां नमः ॥ तन्नोचंद्र कनिष्टकाभ्यां नमः ॥ प्रचो
दयात् करतलकरपृष्टाभ्यां नमः ॥ पुनः ॥ क्षीरपुत्राय हृदयाय नमः ॥ वि
द्महे शिरवायै वषट् ॥ अमृततपाय शिखायै हुं फुट् ॥ धीमहि कवचाय हुं ॥ त
न्नोचंद्र नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ प्रचोदयात् वौषट् ॥ अथ ध्यानं ॥ इति श्रीचंद्र
माकान्यास संपूरणं ॥ संवत १९७९ वर्षे ॥ पोससुदि ६ सोमवासरे ॥ पोथी गु
साई ईसरनारतीजी पठनार्थं ॥ श्रीनागपुरमध्ये ॥ लिपी हीरालाल ब्राम्हणे